महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति व ऐतिहासिक नक्सलबाड़ी सशस्त्र आन्दोलन की पचासवीं वर्षगांठ, दुनिया को झकझोरनेवाली रूसी समाजवादी क्रान्ति की सौवीं वर्षगांठ और अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा का महान शिक्षक कार्ल मार्क्स की दोसौवीं जन्मदिवस को क्रान्तिकारी उत्साह और जोश-खरोश के साथ मनाएं!

केन्द्रीय कमेटी का आह्वान

16 मार्च 2016

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति की पचासवीं वर्षगांठ को 16 से 22 मई 2016 तक मनाएं। नक्सलबाड़ी की पचासवीं वर्षगांठ को 23 से 29 मई 2017 तक मनाएं। बोल्शेविक क्रान्ति की शतवार्षिकी समारोह को 7 से 13 नवम्बर 2017 तक आयोजित करें। मार्क्स की दोसौवीं जन्मदिवस को 5 से 11 मई 2018 तक मनाएं।

केन्द्रीय कमेटी
भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
केन्द्रीय कमेटी

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति व ऐतिहासिक नक्सलबाड़ी सशस्त्र आन्दोलन की पचासवीं वर्षगांठ, दुनिया को झकझोरनेवाली रूसी समाजवादी क्रान्ति की सौवीं वर्षगांठ और अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा का महान शिक्षक कार्ल मार्क्स की दोसौवीं जन्मदिवस को क्रान्तिकारी उत्साह और जोशखरोश के साथ मनाएं!

केन्द्रीय कमेटी का आह्वान

16 मार्च 2016

प्यारे कामरेड्स, भारतीय क्रान्ति के मित्रों, मजदूरों, किसानों व जनता,

ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण चार विश्व सर्वहारा वर्षगांठों को हम कुछ ही दिनों के अन्दर मनाने जा रहे हैं। महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति – इस साल जिसकी पचासवीं वर्षगांठ पूरी हो रही है – समाजवादी चीन में माओ और कम्युनिस्ट पार्टी के प्रत्यक्ष नेतृत्व में चलनेवाला एक अभूतपूर्व जन-आन्दोलन था। इसका लक्ष्य था बूर्जआ व अन्य प्रतिक्रियावादी संस्कृतियों के खिलाफ व्यापक मेहनतकश जनता को जागृत कर सांस्कृतिक अधिरचना के हर एक पहलू को देश के समाजवादी आर्थिक बूनियाद के मुताबिक ढालना। जड़ जमाए हूए पूंजीवाद के राहगीरों के खिलाफ यह एक तीखी वर्ग संघर्ष थी, इसने महान बहस के संशोधनवाद-विरोधी संघर्ष को आगे बढ़ाया और चीनी क्रान्ति के विकाश के क्रम में एक नयी पड़ाव की शुरुआत की। समाजवाद का निर्माण और मजबूतीकरण कर साम्यवाद के तरफ बढ़ने के राह पर कई सांस्कृतिक क्रान्तियों की जरुरत के बारे में माओ के सिखाए गये कथन को इसने सही साबित किया। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसने कई देशों के कम्युनिस्ट आन्दोलनों में

संशोधनवाद से निर्णायक विच्छेद का, नयी मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टियो की स्थापना का और सशस्त्र कृषि क्रान्तिकारी युद्धों की एक नयी लहर का परिप्रेक्ष्य तैयार किया। भारत में इसने महान नक्सलबाड़ी किसान क्रान्तिकारी सशस्त्र आन्दोलन को - जो अपनी पचासवीं वर्षगांठ पूरी करने जा रही है - प्रभावित और प्रेरित किया। हमारी नयी पार्टी भाकपा(माओवादी) के दो महान नेता, शिक्षक और पूर्व-संस्थापक कामरेड्स सीएम और केसी में से एक कामरेड चारू मजुमदार के नेतृत्व में उभरी नक्सलबाड़ी एक दिशा-निर्देशकारी आन्दोलन थी। इस आन्दोलन ने देश की जनवादी क्रान्ति की इतिहास मे एक नयी युग की शुरूआत की। महान रूसी समाजवादी क्रान्ति की जीत की सौवीं वर्षगांठ भी करीब है। इस क्रान्ति ने पूंजीपतियों और सामंतों के नियन्त्रणाधीन मजबूत रूसी राजसत्ता को सशस्त्र बगावत के जरिए ध्वस्त किया और कामरेड्स लेनिन और स्तालिन के नेतृत्व में पहली बार मजदूर वर्ग और मेहनतकश जनता की एक नयी राज्य स्थापित की। इसने समाजवाद के निर्माण का काम हाथ में लिया और एक समाजवादी व्यवस्था की नींव रखकर साम्यवाद की तरफ संक्रमण का रास्ता खोल दिया। । रुसी क्रान्ति का मार्गदर्शक था मार्क्सवाद की सही सर्वहारा विचारधारा और एक सही सर्वहारा क्रान्तिकारी पार्टी। इसने सही रणनीति व कार्यनीति तथा पार्टी व देश के अन्दर पनपे दक्षिणपंथी व 'वाम'-अवसरवाद के खिलाफ निरन्तर संघर्ष का रास्ता अपनाया। इस प्रक्रिया में, समाजवादी निर्माण के दौरान और घरेलु व अन्तर्राष्ट्रीय अवसरवाद के खिलाफ संघर्ष में मार्क्सवाद एक नये और ऊंचे स्तर - लेनिनवाद/मार्क्सवाद-लेनिनवाद - तक विकसित हुआ। सर्वहारा विचारधारा, राजनीति और वैज्ञानिक समाजवाद के संस्थापक और महान दार्शनिक कार्ल मार्क्स का दो सौवां जन्मदिवस (द्विशतवार्षिकी) भी नजदीक आ रहा है। मार्क्स ने एक नयी और वैज्ञानिक सिद्धांन्त व कार्यपद्धति तैयार की और मानव को एक नयी दिशा दिखाई। मार्क्सवादी विचारधारा का विकास तीखी वर्ग-संघर्ष की प्रक्रिया के दौरान तथा इसके अंग के रूप में बुर्जुआ व निम्न-बुर्जुआ विचारधारा, अर्थनीति, राजनीति और संस्कृति के खिलाफ संघर्ष में और मजदूर वर्ग के आन्दोलनों में से उभरे दक्षिण व 'वाम' अवसरवादों के खिलाफ संघर्ष में हुआ। हजारों सालों से वर्ग-शोषण और उत्पीड़न के जंजीरों से बंधे मानव समाज के लिए मार्क्सवाद ने एक नयी युग की शुरूआत की।

मार्क्स की विचारधारा ने वर्गविहीन समाज की तरफ संक्रमण को – और इस तरह समाज की मुक्ति को – एक वास्तविक संभावना में तब्दील की।

वर्तमान दुनिया में पूंजीवाद द्वारा उत्पन्न गुलामी, शोषण, दमन, गरिबी, असमानता, भेदभाव, उत्पीड़न, संकट, युद्ध और विनाश का एक ही विकल्प है समाजवाद व साम्यवाद – इस सत्य को फिर से दोहराने का अच्छा अवसर देते हैं ये तीन आनेवाले वर्षगांठ समारोह। पूंजी के खिलाफ जंग में सर्वहारा पुराने सड़े-गले सामाजिक सम्बंधों को दफनाकर वर्गविहीन समाज की ओर आगे बढ़ने के क्रम में समाजवाद पर आधारित नये सामाजिक सम्बंधों का निर्माण करेंगे। यह वर्गों और वर्ग-संघषों से पूर्ण हजारों साल पुरानी मानव समाज की पूर्व-इतिहास को खत्म करेगी ताकि मानव समाज का असली इतिहास शुरु हो सकें। जो लोग पूंजीवाद की स्थायित्व का दावा करते हैं और साम्यवाद को अप्रासंगिक बताते हैं वे भूल जाते है कि मानव ने अपनी अतीत का सबसे ज्यादा समय वर्गविहीन समाज में गुजारा है, इसका जन्म वर्गविहीन समाज से ही हुआ है और यह भी तय है कि एक के बाद एक कई ऊंचे से उच्चतर स्तरों से होकर इतिहास के सबसे नये, सबसे अन्तिम और सबसे क्रान्तिकारी वर्ग सर्वहारा के नेतृत्व में फिर से मानव एक वर्गविहीन समाज में प्रवेश करेगी। जो लोग सोवियत और चीनी समाजवादी समाजों के उलटफेर का वास्ता देते हैं वे जानबुझकर यह भूल जाते हैं कि कई सदियों तक राजसत्ता के लिए सामंती वर्ग के खिलाफ चले संघर्ष में जीत हासिल करने से पहले बूर्जआ वर्ग को भी अनगिनत हारों का सामना करना पड़ा था। पेरिस कम्युन के समय से ही सर्वहारा ने अपनी हर हार से सबक ली है। गलतियों से सीखकर और हारों से सबक लेकर बूर्जआ वर्ग के खिलाफ सर्वहारा व उसकी पार्टी सभी शोषित सामाजिक वर्गो व तबकों के हिरावल दस्ते के रुप में लगातार, दृढ़ता से और संकल्प के साथ पूंजीवाद, साम्राज्यवाद और सभी प्रतिक्रियावादियों को हराकर पहले एक देश में, फिर कई देशों में और आखिरकार विश्व के पैमाने पर समाजवाद की स्थापना के लिए संघर्ष करती रहेगी। आखिरकार जब सभी जरुरी परिस्थितियां परिपक्व होगी तब मानव समाज अपनी परचम पर लिख सकेगी – "हर किसी से उनके क्षमता के अनुसार, हर किसी को उनके जरुरत के अनुसार"। आईए, इन वर्षगांठ समारोहों के दौरान फिर से एकबार ऐलान करें कि मार्क्सवाद/मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद

(मालेमा) का कोई विकल्प नहीं, सर्वहारा और उसकी पार्टी की नेतृत्व का कोई विकल्प नहीं, क्रान्ति का कोई विकल्प नहीं, समाजवाद और साम्यवाद का कोई विकल्प नहीं!

इनमें से तीन वर्षगांठ – महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति की पचासवीं वर्षगांठ, बोल्शेविक क्रान्ति की शतवार्षिकी व कार्ल मार्क्स की जन्म द्विशतवार्षिकी – को दुनिया के सभी देशों में सर्वहारा वर्ग मनायेगी। हमारी पार्टी भाकपा(माओवादी) इसी अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा वर्ग की एक प्रतिबद्ध टुकड़ी है। यह मालेमा की वैज्ञानिक विचारधारा से मार्गदर्शित होती है। इस विचारधारा को यह ठोस क्रान्तिकारी व्यवहार में सृजनात्मक रुप से लागू करती है, दृढ़ता और निरंतरता से दक्षिणपंथी–अवसरवाद या 'वाम'–संकीर्णतावाद जैसे सभी रंगों के संशोधनवाद के खिलाफ संघर्ष करती है। विश्व सर्वहारा क्रान्ति के एक अभिन्न अंग के रूप में भारत में नयी जनवादी क्रान्ति को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए यह पार्टी एक व्यापक दीर्घकालीन जनयुद्ध लड़ रही है। इन महत्वपूर्ण समारोहों को मनाने के लिए यह अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा का साथ दे रही है। हमारा यह फर्ज है कि दुनिया के सभी सच्चे माओवादी पार्टियों व संगठनों तथा व्यक्तियों के तरह हम भी अपने देश में नयी जनवादी क्रान्ति को आगे बढ़ाने और मालेमा को ऊंचा उठाने, रक्षा करने व लागू करने के क्रम में इन तीनों महान विश्व सर्वहारा क्रान्तिकारी अवसरों को मनाएं। इन तीनों अवसरों को मनाने का मतलब यह है कि मार्क्सवाद की क्रान्तिकारी अंतर्वस्तु को समझना, अतीत के सफल सर्वहारा क्रान्तियों के सार को अपनाना, हमारी ताकत पर निर्भर होना और अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा के सकारात्मक व नकारात्मक अनुभवों से सीखना, हमारी गलतियों और हारों से सबक लेना और साम्राज्यवाद व सभी प्रतिक्रियावादी ताकतों के खिलाफ लड़ते हुए नयी सामाजिक व क्रान्तिकारी परिस्थितियों में नयी जनवादी क्रान्ति को पूरा करने के लिए दृढ़ता से अग्रसर होना।

इसलिए, हमारी पार्टी को इन ऐतिहासिक अवसरों को हमारे आन्दोलन के सभी जगहों पर अपनी ताकत व क्षमता के अनुसार मनाना चाहिए। इन समारोहों को सफल बनाने के लिए सभी पार्टी इकाईयां तैयारियां करनी चाहिए, ज्यादा से ज्यादा प्रयास करनी चाहिए और जनता को सक्रियता व उर्जा के साथ इनमें भाग लेने के लिए आह्वान करना चाहिए। **हम उनसे अपील करते है कि महान**

सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति की पचासवीं वर्षगांठ को 16 से 22 मई 2016 तक मनाएं। नक्सलबाड़ी की पचासवीं वर्षगांठ को 23 से 29 मई 2017 तक मनाएं। बोल्शेविक क्रान्ति की शतवार्षिकी समारोह को 7 से 13 नवम्बर 2017 तक आयोजित करें। मार्क्स की दोसौवीं जन्मदिवस को 5 से 11 मई 2018 तक मनाएं। अगर किसी कारणवश ऊपर दिये गए तारीखों पर इन समारोहों का आयोजन करना संभव न हो सकें तो इन्हें संबधित साल के किसी भी समय आयोजित किया जा सकता है। महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति की पचासवीं वर्षगांठ को मनाने के लिए दिये जानेवाली आह्वान को जारी करने में कुछ अनिवार्य कारण से हुयी देरी के लिए केन्द्रीय कमेटी अपनी खेद व्यक्त करती है। इसलिए इस समारोह को मई 2016 से मई 2017 के बीच किसी भी समय एक सप्ताह के लिए जनता में महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के महत्व के बारे में प्रचार करने की लक्ष्य से मनाया जाना चाहिए। इन सभी अवसरों को एक-एक अभियान के तरह और समारोह सप्ताहों के रुप में मनाएं।

कामरेड्स,

विश्व पूंजीवादी व्यवस्था दुनियाभर में गहरी आर्थिक व राजनीतिक संकट से जूझ रही है, उत्पादन शक्तियों को ध्वंस कर रही है और बढ़ती तीव्रता से शोषण व दमन तथा आक्रामक युद्ध चला रही है। दुनिया के बहुसंख्यक देशों, राष्ट्रीयताओं और लोगों को साम्राज्यवाद के शिकंजे का सामना करना पड़ रहा है जिससे जनता में व्यापक आक्रोश और प्रतिरोध उभर रहे है। दुनिया की सभी प्रतिक्रियावादियों व उनके संस्थाओं को आनेवाले सामाजिक उथल-पुथल भयभीत कर रहे है। इसलिए बढ़ते सामाजिक असंतोष को दिकभ्रमित करने व मोड़ने के लिए वे मालेमा और समाजवादी क्रान्ति, नयी जनवादी क्रान्तियों व राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलनों तथा जनता के सभी तरह के जनवादी संघर्षों के खिलाफ व्यापक प्रतिक्रान्तिकारी प्रचार सहित कई दमनात्मक व छल-कपटतापूर्ण कार्यनीतियां अपना रहे हैं। इस तरह की एक परिस्थिति में सैद्धान्तिक, राजनीतिक, सैनिक और अन्य सभी क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर दुश्मन का मुकाबला करना हमारा लक्ष्य होना चाहिए। इन क्रान्तिकारी समारोंहों को इसके लिए इस्तेमाल करना चाहिए। हमें इन अवसरों का उपयोग देश के मजदूर, किसान, छात्र-नौजवान, बुद्धिजीवी,

महिला, दलित, आदिवासी व अन्य उत्पीड़ित सामाजिक तबकों, उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं और धार्मिक अल्पसंख्यकों तथा मेहनतकश जनता के सभी हिस्सों को राजनीतिक रूप से शिक्षित करने के लिए कोशिश करनी चाहिए। हमें उनसे आह्वान करना चाहिए कि परिस्थिति का सामना करने के लिए वे उठ खड़े हों, एकजुट हों और इतनी ताकत के साथ संगठित हों कि वे शासक-वर्ग के हमलों का सार्थक प्रतिरोध कर सकें। हमें उनसे नयी जनवादी क्रान्ति में शामिल होने और जनयुद्ध में बड़ी संख्या में तथा अधिक जुझारू रूप से शामिल होने की अपील करनी चाहिए। नयी जनवादी क्रान्ति ही व्यापक मेहनतकश जनता की मुक्ति का एकमात्र रास्ता है – इस संदेश को उनके बीच व्यापक रूप से प्रचार करना चाहिए। यह वर्तमान के समय में और भी महत्वपूर्ण हो जाता है जब जनता के खिलाफ चौतरफा हमला के हिस्से के रूप में ब्राह्मणवादी हिन्दू फासीवाद भारतीय शासक वर्गों और साम्राज्यवाद के हित में साम्यवाद और सभी प्रगतिशील और जनवादी आन्दोलनों, संस्कृतियों, मूल्यों, आकांक्षाओं और आचरणों पर और अधिक व्यापकता व क्रूरता के साथ खुले तौर पर या संसदीय मुखौटा के पीछे से वार कर रही है।

इन वर्षगांठ समारोहों को मनाने के लिए हमें दो तरह के कार्यक्रमों की योजना बनानी होगी। इनमें से पहला है हमारी पार्टी, पीएलजीए, क्रान्तिकारी जन कमेटियां (आरपीसियां) और क्रान्तिकारी जन संगठनों द्वारा ग्रामीण इलाकों में आयोजित किये जानेवाले कार्यक्रम। दूसरे प्रकार के कार्यक्रम है मुख्य रूप से शहरों में होनेवोले खुले और कानूनी कार्यक्रम जिन्हें खुले संगठनों द्वारा स्वतंत्र रूप से या अन्य क्रान्तिकारी-जनवादी ताकतों व व्यक्तियों के साथ मिलकर आयोजित किये जानेवाले कार्यक्रम। इन कार्यक्रमों को आयोजित करने के लिए हमारे जन संगठनों के नेतृत्व को ज्यादा से ज्यादा पहलकदमी लेनी चाहिए। उन्हें हमारे मित्र ताकतों के साथ आयोजनों की रूपरेखा तैयार करने की जिम्मेदारी लेनी चाहिए।

हालांकि नक्सलबाड़ी आन्दोलन की पचासवीं वर्षगांठ का अंतर्राष्ट्रीय महत्व है, इसके बावजुद यह मुख्य रूप से हमारे देश में चल रही दीर्घकालीन जनयुद्ध से ही सम्बन्धित है। समुचे भारत और राज्य स्तर पर माओवाद के समर्थकों और क्रान्तिकारी जनवादी पार्टियां, संगठनों व व्यक्ति इस वर्षगांठ को मनाने के लिए

हमारे साथ आने के लिए इच्छुक हो सकते हैं बशर्ते हम पर्याप्त कोशिश करें, पहलकदमी लें और लचीलापन दिखाएं। हालांकि इस अवसर को अन्य ताकतों के साथ मिलकर मनाने की कोशिश करना जरूरी है, हमें नक्सलबाड़ी की सैद्धान्तिक-राजनीतिक अंतर्वस्तु और महत्व के साथ कोई भी समझोता होने नहीं देना चाहिए। इसलिए नक्सलबाड़ी की सार को नुकसान न पहुचाते हुए इसे ऊंचा उठानेवाले ताकतों के साथ ही हमारा एकजुट होना बेहतर है। वर्तमान में चल रही क्रान्तिकारी और जनवादी आन्दोलनों का वे साधारण रूप से पक्षधर होना चाहिए। इन बातों को ध्यान में रखते हुए नक्सलबाड़ी की पचासवीं वर्षगांठ की आयोजन में हमें ज्यादा से ज्यादा ताकतों की भागीदारी सुनिश्चित करने की कोशिश करनी चाहिए। साथ ही, दुनिया के अलग अलग देशों के सच्चे सर्वहारा पार्टियों, संगठनों, व्यक्तियों व भारतीय क्रान्ति के मित्रों, सुभचिंतकों और समर्थकों से भी नक्सलबाड़ी की पचासवीं वर्षगाठ के अवसर पर भारत में चल रहे दिर्धकालीन जनयुद्ध के संदर्भ में कार्यक्रम आयोजित करने की हमारी केन्द्रीय कमेटी अपील करती है।

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति की पचासवीं वर्षगांठ, बोल्शेविक क्रान्ति की शतवार्षिकी और मार्क्स की जन्म की द्विशतवार्षिकी को सभी सच्चे मार्क्सवादियों के साथ-साथ संशोधनवादी भी मनाएंगें। इसलिए इन समारोहों को नक्सलबाड़ी की वर्षगांठ से भी ज्यादा व्यापक स्तर पर कई ज्यादा ताकतों के हिस्सेदारी से आयोजित करने की संभवना है। लेकिन हमें केवल उन्हीं मार्क्सवादी और जनवादी ताकतों के साथ एकजुट होना चाहिए जो मार्क्स की सिखायी सार-तत्व, यानी पुराने राज्य को बल के जरिए ध्वस्त करते हुए सर्वहारा की तानाशाही के तहत समाजवाद का निर्माण कर एक वर्गविहीन समाज यानी साम्यवाद की तरफ आगे बढ़ने की जरुरत को ऊंचा उठाता हो। मार्क्सवाद की इस सार को - जिसे उसके सही अर्थ में लेनिन और स्तालिन के नेतृत्व में रुस में पहली बार लागू किया - दुनिया की सभी संसोधनवादी व नयी-ससोंधनवादी ताकतें नकारते है, दरकिनार करते है और इस तरह मार्क्सवाद के नाम पर मार्क्सवाद के खिलाफ पुंजीवाद-साम्राज्यवाद के हित में जंग लड़ते है। ये ताकतें आज हर देश में मौजुद है और मजदूर वर्ग को क्रान्तिकारी राह पर आगे बढ़ने से रोकने कि कोशिश करते है। हमारे देश में भी भाकपा व माकपा जैसी

अवसरवादी ताकतें मार्क्स की इस बुनियादी सीख को मान्यता नहीं देती है। इसलिए इन समारोहों के आयोजन में अपनी पार्टी के बैनर के साथ इनसे एकजुट होने से हमें परहेज करना चाहिए। एक पल के लिए भी हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि सभी तरह के अवसरवाद के खिलाफ एक निरंतर समझौताहीन संघर्ष के बिना पार्टी के कतारों और जनता को एकताबद्ध कर दुश्मन के खिलाफ लड़ाई में स्पष्टता और साहस के साथ आगे बढ़ना असंभव है। लेकिन इन पार्टियों को समर्थन करनेवाले बुद्धिजीवियों, जो मार्क्स के शिक्षा और बोल्शेविक क्रान्ति के सार-तत्व को मानते हों, को हमारे मंचों और कार्यक्रमों में आमन्त्रित किया जा सकता है। क्योंकि बोल्शेविक क्रान्ति की सौवीं वर्षगांठ और मार्क्स की जन्म की दो सौवीं वर्षगांठ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाया जाएगा, भारत के किसी एक शहर में सभी पक्षों के सहमति से तय किये गये एक तारीख पर कम से कम एक अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम आयोजित करने की हमें प्रयास करनी चाहिए। इस कार्यक्रम को हम तीनों समारोहों के बारे में चर्चा करने के लिए उपयोग कर सकते हैं। इसी तरह, इन समारोहों को मनाने के लिए विदेशों में सच्चे क्रान्तिकारी ताकतों द्वारा आयोजित किये जानेवाले अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में भारतीय क्रान्तिकारियों को शामिल होना चाहिए।

यह निश्चित है कि चाहे शहरी इलाकें हों या ग्रामीण, हमें इन समारोहों का आयोजन करने से रोकने के लिए दुश्मन सभी जगहों पर हर प्रकार के बाधा उत्पन्न करेंगे। दुश्मन के इस तरह के प्रयासों के बावजुद इन कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक आयोजन करने के लिए हमें तैयार रहना चाहिए तथा इसके लिए व्यवहारिक व वास्तविक योजना बनानी चाहिए। हमारे जनाधार पर आधारित होकर और जनता को गोलबंद कर शहरी इलाकों में हमें जन सभाएं, सभा घरों में बैठकें और सेमिनार आदि आयोजित करना चाहिए। सभी कार्यक्रमों का लक्ष्य मालेमा विचारधारा को, वर्तमान परिस्थिति में तथा आनेवाले दिनों में इसकी प्रसंगिकता को तथा पार्टी की वैचारिक-राजनीतिक लाईन को जनता के बीच ले जाने की होनी चाहिए। अर्थवाद, सुधारवाद, संसदवाद और उत्तर-आधुनिकतावाद आदि बुर्जुआ व निम्न-बुर्जुआ विचारधाराओं के विकल्प के रूप में मालेमा को पेश किया जाना चाहिए। विश्व सर्वहारा क्रान्ति की जरूरत, पार्टी नेतृत्व के बीच से ही उभरे संशोधनवादियों, विघटनकारियों और पूंजीवाद-परस्तों के विश्वासघात

के बावजूद रूसी व चीनी क्रान्तियों की अभूतपूर्व विश्व-ऐतिहासिक उपलब्धियां और मानव के इतिहास में इनके द्वारा हासिल किये गये महान छलांग - इन पहलुओं को रेखांकित किया जाना चाहिए। रूसी, चीनी और अन्य समाजवादी/नयी जनवादी राज्यों के पतन का कारण और भविष्य में इस तरह के उलटफेरों से बचने के उपायों जैसे प्रसंगिक मुद्दों को गंभीरता के साथ और विस्तृत रूप से चर्चा करनी चाहिए। सर्वहारा का वैज्ञानिक सिद्धान्त के बारे में जो वर्ग संघर्ष, उत्पादन के लिए संघर्ष और वैज्ञानिक प्रयोग से उभरा है, अतीत के विफलताओं से बचने के लिए सर्वहारा नेतृत्व-पद्धति और कार्यशैली के बारे में तथा वर्गदिशा और जनदिशा को लागु करने की जरूरत के बारे में हमारी दृष्टिकोण को व्यापक जनता के सामने पेश करना चाहिए।

इसके अलावा, पार्टी, जनसेना, जन-सत्ता के अंगों/आरपीसियों और क्रान्तिकारी जनसंगठनों को क्रान्तिकारी आन्दोलन के अब तक के सफलताओं को जनता के बीच प्रचार करना चाहिए। इन अवसरों पर ऊपर से लेकर नीचे तक प्राथमिक इकाईयों, जन संगठनों/संयुक्त मोर्चा के मंचों में पार्टी फ्रेक्शनों सहित सभी पार्टी कमेटियों को मालेमा, बोल्शेविक क्रान्ति, महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति और हमारे देश की नयी जनवादी क्रान्ति पर सैद्धान्तिक अध्ययन और राजनीतिक कक्षाएं आयोजित करनी चाहिए। नयी ताकतों से अपनी उर्जा बढ़ाने के लिए पार्टी, मिलिशिया और जन संगठनों को नयी भर्ती अभियान चलानी चाहिए। हमारे कार्यक्रमों को बाधित करने के लिए दुश्मन द्वारा चलाए जानेवाले हमलों को देखते हुए प्रतिरक्षा और गुप्त कार्य पद्धति के सभी नियमों का पालन कर गुरिल्ला जोनों में मशाल जूलूस, सशस्त्र रैलियां, जनसभाएं और ग्रुप बैठकें आदि आयोजित करनी चाहिए। इसी तरह, शहरों में हमारें मित्रों और जनता को गोलबन्द कर जन संगठनों को रैलियां, बैठकें, जनसभाएं, सेमिनार आदि आयोजित करनी चाहिए। हमारी पार्टी, पीएलजीए, आरपीसियों तथा क्रान्तिकारी जन संगठनों द्वारा प्रचार सामग्री तैयार करनी चाहिए, संवाद-माध्यमों को साक्षात्कार देनी चाहिए तथा सैद्धान्तिक-राजनीतिक पुस्तकें और विभिन्न भाषाओं में पत्रिकाओं का विशेषांक प्रकाशित करनी चाहिए। क्रान्तिकारी सिद्धान्त व इतिहास पर पुस्तकें प्रकाशित या पुन:प्रकाशित करना चाहिए। अलग-अलग तरीकों के प्रचार सामग्री और सभी तरह के प्रकाशन सरल और सृजनात्मक रूप

से पेश किये जाने चाहिए ताकि जनता इन्हें आसानी से समझ सकें। जन संगठनों के फ्रेक्शनों को इस काम में पहलकदमी लेकर विशेष ध्यान देना चाहिए। पार्टी कैडरों और कार्यकर्ताओं में मालेमा, रूसी क्रान्ति और पार्टी इतिहास की समझदारी बढ़ाने के लिए सरल पुस्तकें/पुस्तिकाएं/लेखों का संकलन प्रकाशित करने पर विशेष ध्यान देना चाहिए। इन चारों समारोहों के महत्व को देखते हुए पार्टी की वैचारिक-राजनीतिक स्तर को ऊंचा उठाने पर ध्यान देने की जरूरत है।

क्रान्ति मजदूरों और मेहनतकश जनता का उत्सव है और इनमें हासिल कि गयी जीत भी उनके वीरतापूर्ण शहादतों का ही परिणाम है। आनेवाले तीन वर्षगांठ भी मेहनतकश जनता का ही उत्सव है। इसलिए हमारी सभी प्रचार, गोलबंदी और कार्यक्रमों में व्यापक जनता का सक्रिय भागीदारी और सहयोग सुनिश्चित करनी चाहिए। हमें जनता को बड़े पैमाने पर शामिल करने कि कोशिश करनी चाहिए ताकि वे इन अवसरों को अपने ही उत्सव की तरह अपनाएं और चल रही क्रान्तिकारी युद्ध में अपनी भूमिका का उत्साह के साथ बढ़ोतरी करें।

कामरेड्स,

एक वर्गविहीन समाज स्थापित करने के टेढ़े-मेढ़े राह पर दुश्मन के खिलाफ हजारों लड़ाईयों में व्यापक जनता का मार्गदर्शन करने की जिम्मेदारी अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा के कंधों पर ही है। मालेमा, यानी वर्तमान की मार्क्सवाद, की अजेय विचारधारा को हथियार बनाकर वह इस ऐतिहासिक लक्ष्य को पूरा करने की ओर आगे बढ़ता रहेगा। हमारी पार्टी ने इस वर्ग की एक टुकड़ी के रूप में महान नक्सलबाड़ी सशस्त्र किसान आन्दोलन के उभरने के बाद के पचास सालों में कई उतार-चढ़ावों और मोड़ों से भरे कठिन राह से गुजरते हुए देश की दीर्घकालीन जनयुद्ध में महत्वपूर्ण सफलताएं हासिल की है। मालेमा को देश की ठोस परिस्थिति में सृजनात्मक रूप से लागू कर, साम्राज्यवादियों के साथ साठगांठ से शासक वर्गों द्वारा चलाए जा रहे निरंतर फासीवादी दमन का प्रतिरोध कर और हजारों वीर शहीदों के खून बहाकर ही इन उपलब्धियों को हासिल किया हैं। आनेवाले तीन समारोहों का उपयोग हमें इन उपलब्धियों की रक्षा करने व ऊंचा उठाने तथा इनसे प्रेरणा लेकर जनयुद्ध में और आगे बढ़ने के लिए करना चाहिए। इन अवसरों पर हमें पार्टी व जनता को मालेमा से लेश और शिक्षित करना

चाहिए तथा हमारे अतीत के व्यवहार में हुए गलतियों से ली गयी सबकों और साकारात्मक व नकारात्मक अनुभवों को जनता के सामने पेश करना चाहिए। इन समारोहों के जरिए हमारी पार्टी, पीएलजीए, आरपीसियों, जन संगठनों, मित्र शक्तियों और जनता की उत्साह और जुझारू भावना को बढ़ाना चाहिए। मित्र शक्तियों और जनता की विश्वास को और ज्यादा पैमाने पर जीतकर उन्हें हमारे पक्ष में लाने की प्रयास करनी चाहिए ताकि उन्हें दुश्मन के खिलाफ व्यापक स्तर पर मजबूती से एकजुट किया जा सकें। शोषण, दमन, उत्पीड़न और गुलामी के जंजीरों से मुक्ति के लिए नयी जनवाद, समाजवाद और साम्यवाद ही एकमात्र रास्ता के रुप में पेश करने की हमें हरसंभव प्रयास करनी चाहिए। यही राह अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहारा के महान शिक्षक मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, स्तालिन और माओ की है। इसी राह को अक्टोबर क्रान्ति, चीनी क्रान्ति और नक्सलबाड़ी ने अपनाया। आइये, इन वर्षगांठों के अवसर पर इस राह पर आगे बढ़ने की हमारी प्रण को फिर से एक बार दोहराएं। सभी पार्टी इकाईयां व सदस्यों से हम अपील करते है कि केन्द्रीय कमेटी की इस आह्वान को व्यापक रूप से जनता में प्रचारित करें और उनके सक्रिय भागीदारी से इन चारों महत्वपूर्ण समारोहों को सफलतापूर्वक आयोजित करें।

क्रान्तिकारी अभिवादन के साथ,

Ganapathy

(गणपति)
महासचिव,
केन्द्रीय कमेटी
भाकपा (माओवादी)